नाम भक्तियोग अथवा बुद्धियोग है। यही पूर्ण योग है और इसी में जीवन की सब से बड़ी सफलता है।

प्रामाणिक सद्गुरु का आश्रय और किसी भक्तसंघ से सम्बन्ध होने पर भी जो मनुष्य अल्प बुद्धि के कारण प्रगति नहीं कर पाता, उसके हृदय में श्रीकृष्ण उपदेश करते हैं, जिससे वह अन्त में सुगमता से उन्हें प्राप्त हो जाय। इसके लिये बस इतनी योग्यता चाहिए कि नित्य-निरन्तर कृष्णभावनाभावित रहते हुए प्रेम और भक्तिभाव से सब प्रकार की सेवा का समर्पण करता रहे। श्रीकृष्ण के लिए कुछ न कुछ कर्म अवश्य करे। यह आवश्यक है कि ऐसा कर्म प्रेमपूर्वक किया जाय। बुद्धिमान् भक्त स्वरूप-साक्षात्कार के पथ पर अवश्य उन्नति करता है। भक्तियोग में जिसकी निष्कपट श्रद्धा है, उसको श्रीभगवान् ऐसा सुयोग देते हैं, जिससे वह प्रगति करता हुआ अन्त में उनको प्राप्त हो जाय।

तेषामेवानुकम्पार्थमहमज्ञानजं तमः।
नाशयाम्यात्मभावस्थो ज्ञानदीपेन भास्वता।।११।।

तेषाम्=उन पर; **एव**=ही; **अनुकम्पा अर्थम्**=विशेष अनुग्रह करने के लिये; **अहम्**=मैं; **अज्ञानजम्**=अज्ञान से उत्पन्न; **तमः**=अन्धकार को; **नाशयामि**=दूर कर देता हूँ; **आत्मभावस्थः**=अन्तर में स्थित हुआ; **ज्ञान**=ज्ञान के; **दीपेन**=दीपक द्वारा; **भास्वता**=प्रकाशमय।

अनुवाद

उनपर अनुग्रह करने के लिये, उनके हृदय में बैठा मैं स्वयं अज्ञान से उत्पन्न अन्धकार को ज्ञान के प्रकाशमय दीपक द्वारा नष्ट कर देता हूँ।।११।।

तात्पर्य

जब श्रीचैतन्य महाप्रभु वाराणसी में **हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे**—इस महामन्त्र के संकीर्तन का प्रवर्तन कर रहे थे, तो हजारों मनुष्य उनके अनुगामी हो गए। तत्कालीन काशी के अत्यन्त प्रभावशाली विद्वान् प्रकाशानन्द श्रीचैतन्य को भावुक कहकर उनका उपहास किया करते। कभी-कभी दार्शनिक भक्तों की निन्दा करते हैं· उनकी धारणा में अधिकांश भक्त अज्ञानान्ध और दर्शन शास्त्र से अपरिचित भावुक मात्र हैं। परन्तु वास्तव में यह सत्य नहीं है। भक्तों में अनेक विद्वच्चूड़ामणि हुए हैं और उन्होंने भक्ति-दर्शन का विशद प्रतिपादन भी किया है। यदि भक्त इन ग्रन्थों अथवा गुरु से लाभ न उठाये, तो भी उसकी निष्किंचन भक्ति से द्रवित होकर अन्तर्यामी श्रीकृष्ण स्वयं उसकी सहायता करेंगे। कृष्णभावना-परायण निष्किंचन भक्त अज्ञानी नहीं रह सकता। इसके लिए केवल इतना ही योग्यता चाहिए कि पूर्ण रूप से कृष्णभावनाभावित होकर भक्तियोग के परायण रहे।

आधुनिक दार्शनिकों के मत में विवेक-बुद्धि के बिना शुद्ध ज्ञान नहीं हो सकता।